सैतान बण्या भगवान

लेखक :
संत कृष्ण दास जी महाराज गरीबदासी डेरा सत साहिब
सतसंग भवन ठाकुरपुरा धाम (कलाल्टी) जिला अम्बाला
पिन-133203 (हरियाणा)
दूरभाष : 01731-289648, 9416188314 (मोबाईल)

भक्त रामपाल दास इन्जिनियर ऊर्फ संत रामपाल दास ऊर्फ जगद्गुरू तत्वदर्शी संत रामपाल दास निंदक शोसन कर्ता गुरू द्रोही के पोल खाते का कुछ अंश पेश करता (स्वामी कृष्णदास गरीब दासी चेला अवधूत स्वामी भक्त राम जी महाराज)

जगदगुरू तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम करौंथा से प्रकाशित भक्ति और भगवान नामक पुस्तक मुझ दास (स्वामी कृष्णदास) को एक शिष्य से प्राप्त हुई मैंने भी जल्दी में मोटा-मोटा इसको पढ़ा हैं जिसमें हमारे नाम से हडिंग प्रथम पृष्ठ पर ही है ''भक्त संजय ऊर्फ कृष्णदास गुरू द्रोही का पोल खाता'' पढ़कर बड़ी खुशी उत्पन्न हुई और मैं जोर से हस पड़ा तो पास बैठे हुए शिष्य पूछने लगे हें गुरूदेव इस पुस्तक को पढ़ने से हमारे हृदय में क्रोध की ज्वाला भड़क रही है और आप जी हस रहे है इस हसी का कारण क्या ? दास जानकर हम अग्यानीयों को समझाइए हमारा भ्रम दूर कीजिए हमारे को सच्चाई से अवगत कराएं भक्तों की जिज्ञासा को जानकर मैंने बड़े प्यार से अपने पास पढ़े हुए भक्तों को समझाया सर्प को दूध पिलाने का कोई फायदा नहीं क्योंकि सर्प को पिलाया हुआ कीमती दूध भी आखिर जहर ही बनता है मैंने भी अपने भूतकाल में ऐसा ही किया, एक बहुत ही सुन्दर विषैला सर्प जो देखने में बहुत सुन्दर लगता है उसकी बहुत सेवा की अपने जन्म दाता माता-पिता को छोड़कर जिन्होंने बड़े लाड-प्यार के साथ मेरा पालन पोषण किया, उनके 100 वर्षो तक भी न भूलाने वाले कर्ज को, उस ऐसान को भूला कर मैंने इस भक्ति और भगवान नामक पुस्तक के लेखक जहरीला सर्प रामपाल की सेवा परमेश्वर समझकर की मैंने इनको साक्षात परमेश्वर कबीर साहिब जी महाराज का अवतार समझा और अपनी नौकरी, घर, बहन, भाई, माता पिता सभी का परित्याग कर 1996 से 2001 तक पांच साल उस जरूरत के समय सतगुरू महाराज की वाणी प्रचार में सहयोग दिया। जो किसी भक्त आत्मा से छानी नहीं है और

जगतगुरू तत्वदर्शी कहलाने वाले स्वयं अपने दिल पर हाथ रखकर और सतगुरू महाराज को साक्षी रखकर विचार करें तो मेरी की हुई सेवा उसको सोने नहीं देगी, फूट-फूट कर रोएगा कि मैंने स्वयं गलती करके ऐसे संत को स्वयं अपने हाथों से खो दिया, परन्तु माया के नशे ने उसको अन्धा बना दिया, इतना वह सोच ही नही सकता अपनी मान बड़ाई सुख ऐशो आराम के किचड में इतने धस चूके है कि परमेश्वर को ही भूला दिया। जिसके खोटे नीच कर्मो को देखकर मैने उनका साथ छोड़ना ही उचित समझा (जगद्‌गुरू तत्वदर्शी संत दास) ये चारों ही शब्द बड़े पूजनीय है परन्तु मेरी दृष्टि से ऐसे नीच इन्सान के नाम के आगे पीछे लगना इन शब्दों का अपमान ही है। हे, मेरे प्यारे परमेश्वर के हंसो आपको मेरे मुख से ये शब्द सुनकर आश्चर्य हो रहा होगा और एक संसय भी मन में खड़ा हो गया होगा कि मैंने जिसको परमेश्वर समझा इतनी सेवा कि संसार को भूलाकार, उसका साथ क्यों छोड़ दिया ? और अब नाम के आगे पिछे लगने वाले शब्दों को कह रहे हैं कि यह इस नाम के आगे पिछे शोभनीय नहीं है बल्कि अपमान हैं शब्दों का, ऐसा क्यों ?

आप इन दोनों प्रश्नो को याद रखना उत्तर बाद में विस्तार से समझाऊंगा, आईये पहले इस पुस्तक पर थोड़ा सा विचार करते है इस पुस्तक के माध्यम से ही आपके संसय को दूर करेंगें। गरीब संगत मांही कुसंगत ऊपजै, जैसे बन में बांस।

आपा घिस-2 अग्नि लगावे, करै बनखण्ड़ का भी नास।।

हे प्रिय भक्तों यह वाणी आचार्य बन्दी छोड़ सतगुरू गरीबदास जी महाराज की वाणी है जो हमारे को निर्देष दे रहे है कि जैसे बन के अन्दर हर प्रकार के वृक्ष होते है चन्दन जैसे खुशबूदार वृक्ष भी होते है और बांस भी उसी वन के अन्दर उत्पन्न होते है और जब हवा के झोंके चलते है तो बांस के वृक्ष आपस में टकराते है आपस में टकराने से उस घर्षण से उनमें अग्नि पैदा होती है जिससे उस वन में आग लग जाती है और वह खुशबूदार

चन्दन जैसे वृक्ष भी अग्नि की चपेट में आ जाते है और जल कर भस्म हो जाते है, इस प्रकार जब हम अच्छी बाते सुनते हैं सज्जन पुरुषों का संग करते है सत्संग करते है। तो हमारे हृदय में अच्छी बातें उत्पन्न होती है हृदय प्रसन्न चित रहता है अच्छी बातो के साथ-साथ बूरी बाते भी उत्पन्न होती हैं क्योंकि यह मन का स्वभाव है। पांच तत्व, तीनो गुणो, पच्चीस प्रकृति इस शरीर के अन्दर हर वक्त चलाय मान रहती है तीनों गुणों के कारण ही हर कार्य कार्यशील हो रहा है। अतः बुरे विचारों का भी उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है और धीरे-धीरे इन बुरे विचारों की अग्नि इतनी भड़क जाती है कि सब ज्ञान-ध्यान को भूला कर जीव को भस्म कर देती है फिर जीव अपनी करनी पर पश्चाता है। मैंने यह बुरा कार्य किया मैंने यह नहीं करना चाहिए था।

बुरा कार्य होने के पश्चात् फिर जिसका विवेक कार्य करता है अपने आपको वह धिकारता है पश्चाताप करता है तो परमेश्वर इतने दयालु हैं उस जीव को फिर भी उभार लेते क्योंकि बुरा कर्म होने के बाद उनके आधीनता आई, अपने आपको छोटा समझा, अपने आप को नीच समझा, अपने आपको आजीज समझा सो परमेश्वर ने उन्हें उभार लिया, परन्तु उनका क्या होगा, मुझे बड़ा आश्चर्य है, अपने आपकों पूर्ण संत कहते हैं, और कहते है मेरी संगत में कुसंगत उपजेगी, अरे संगत मे तो कुसंगत उपजेगी ही पहले अपने हृदय की कुसंगत को देख जो तेरे शरीर रूपी वन में बांस रूपी बूरे विचार कुसंगत उपज रही है जो बताने के बाद भी उससे नहीं बच पाए बल्कि यही जवाब दिया, यहाँ तो ऐसा ही होगा,'' जिसने रहना हो रहो,'' जिसने जाना हो जाओ उस दिन को याद करों मैने यह भी कहा था मैं जा रहा हुँ और आप रोक रहे थे क्योंकि हर परमेश्वर के अच्छे काम में मैंने आप जी का सहयोग दिया परन्तु परमेश्वर ने मुझे विवेक दिया है मैं आपके बुरे कर्मो में सहयोग नहीं दे सका परमात्मा कि आकाशवाणी को सिरोधार्य करके आपकी संगत आपका आश्रम और आप जी के बूरे विचार को देखते हुए आप को छोड़ दिया निर्भय होकर के।

सतगुरू महाराज की वाणी कहती है।

गरीब झुठे गुरू कुं झटक दे, शिष स्वामी कुं फूंक।

यामें दोष दया नहीं, शब्द कहया हम कूक।

हे प्रिय भक्तआत्माओं सतगुरू गरीबदास की वाणी हमारा संविधान है उसको पढ़ो विचार करो वही हमारे जगतगुरू हैं वही तत्वदर्शी हैं वही पारखी है, वही संत व परमेश्वर हैं बाकी हम सब उनके दास हैं।

सतगुरू कबीर साहिब जी कहते हैं मेरे को वो ही जन अच्छे लगते हैं जिसमें दीनता आती है

जन को दीनता जब आवै

सों पद देऊ दास अपने को ब्रह्मादिक नहीं पावैं (टेक)

(1) औरन को पूरा कर जानै, आपहि ओछ कहावै।

तुम ते सत कहत हों अवधू, सो मेरे मन भावैं।।

(2) और सबहन ते तोड़ि स्नेहा, साहिब के गुण गावै।

होय अधीन प्रेम लौ लावे, कुल अभिमान बहावै।।

(4) गुरू की दया साधु की संगति, बनत-2 बनि जावै।

कह कबीर सुनो हो अवधू, क्यों न परम पद पावै।।

सतगुरू गरीबदास जी महाराज भी कहते हैः-

दासातन हंसा को खेऊं, राज पाट बैकुण्ठा देऊं।

दास दरस परमानन्द होई, बिन दासातन मिलै न कोई।

कोटि कर्म जो तन लिपटाई दासा तन बिन कहैं कटैं न भाई।

परन्तु इस पुस्तक का निकालना (भक्ति और भगवान) अपने ''मुह मियां मिठु'' वाली कहावत है, रामपाल का जीवन चरित्र जो इस पुस्तक के भुमिका वाले पृष्ठ पर दिया हैं सफेद झुठ लिखने वाला कोई दूसरा नहीं उसका अपना छोटा सगा भाई भक्त महेन्द्र दास (धनाना) ही है। अपने पुल आप ही बांध रहे है। सतसंगी भक्त जन और उनके साथ रहने वाले साथी रिस्तेदार अभी जिन्दा है जो ये जानते है कि स्वयं महेन्द्र और रामपाल दोनों

इक्टठे बैठ कर सराब पिते थे स्वयं मेरे सामने भी महेन्द्र ने शब्द उच्चारण किए कि हमें तो ज्ञान नहीं था पहलें अज्ञान में समय बर्बाद कर दिया हम दोनों भाई इक्ट्ठे बैठकर पीते थे एक भक्त ने बताया कि जब मैं रामपाल को संत रामसरूप (विवेकानन्द) जी के पास लेकर गया तो उस समय शराब पी रखी थी रामसरूप जी से समझाया इनको ज्ञान दिया तब के बाद धीरे-धीरे इस लाइन पर लगे ये बाते जीवन चरित्र में नही दी क्योंकि ये बाते लिखे तो पढ़े लिखे समझदार व्यक्ति विचार करें ? तो ये झंडी बहुत जल्दी फट जाए कि ये सभी स्वयं ढोगी इक्कठे हो रहे हैं। यदि झूठ के पूल बांध कर समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर भी ली तो क्या हुआ, कोई बड़ी बात नहीं, परमेश्वर के दरबार मे लेखा देना है जिसके पास परमेश्वर का नाम है भिक्षा मांग कर अपना पेट भरता है तो वह ऐसे झुठी प्रतिष्ठा वाले से कई गुणा ज्यादा अच्छा है सतगुरू महाराज वाणी में कहते है,

नाम सहत में वतन भला है, जो दर दर मांगे भीखा।

परन्तु ये रामपाल पूरा कृतघ्नी जीव है जो ऐसे महापुरुष की भी निदां करता है जो इसको लाइन पर लगाने वाला है ये स्वयं पहले उस संत रामसरूप जी के फोटों के आगे ज्योति जगाकर हाथ जोड़ कर उनके फोटों की भी पूजा करता था मैं आप लोगों को दिखाऊंगा मेरे पास रखा है और नित्य नियम के गुटके में भी छपा रखा है कि श्री रामसरूप जी ने भेद बताया, स्वामी रामदेवानन्द जी ने सफल बनाया रामपाल ने जान लिया, पारस से कचंन बना लोह।

ऐसे उस महान संत रामसरूप (विवेकानन्द) को भी ठुकरा दिया उसको भी कहते है काल का दूत है सो ऐसे महापुरूषो की निद्या करने वाले स्वयं भी नर्क जाऐगें ओर अपने अनुनाईयों को भी ले जाऐगे। और रही बात भगवा वस्त्रों की सांसारिक उधारण तर्क वितर्क तो हमे आते नहीं परन्तु बड़े अच्छे-2 त्यागी, महापुरूष भगवा वस्त्रों में हुए है। स्वामी दयालुदास, स्वामी भास्करानन्द स्वामी ब्रह्म सागर भूरी वाले, और स्वयं परम पुजनीय

स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज भी भगंवा वस्त्रों में ही थे। और स्वामी रामदेवानन्द महाराज कि जो संगत है वह इनको कोई खास महत्व नहीं देते क्योंकि वह संतों के सेवक है सतों की सेवा करने के संस्कार स्वामी जी महाराज ने उनको डाल रखे है ये कहता था कि बस संत तो इस पृथ्वी पर मैं ही हुँ परमेश्वर ने मुझे भेजा है स्वयं मैंने ही स्वामी रामदेवानन्द को सार नाम का ज्ञान कराया उन्हें ज्ञान नहीं था। ये बाते तो मेरे सामने भी कई बार कहीं हैं इनकी ऐसी कपट भरी चाल बाजी की बाते सुनकर वहां के भगत इनसे चिंड़ने लगे और अब जीवन चरित्र में लिखते है कि स्वामी जी ने सार नाम दिया अब वर्तमान के भक्त जन विचार करें कि ऐसी कपट की छल युक्त बाते करने वाला संत हो सकता है हाँ आने वाले 50 या 100 साल में ये सभी बाते शायद सत्य हो जाए क्योंकि वह लेख पढ़ेगें वह रामपाल की असलियत को नहीं जानते होगें लेकिन वर्तमान में मेरे जैसे बहुत भक्त है जो इनकी असलियत जानते हैं। इसलिए भविष्य के लिए भी अवश्य लेख लिख कर जाऐगें ऐसे दुष्टों से बचकर रहना। यह तो इतना बड़ा झुठा चाल बाज है मेरे जैसे सैंकड़ों बच्चो का शोषण करता है सतलोक ले जाने का लालच देकर माँ-बाप, भाई-भाई में झगड़े करवा कर ''फूट डालो राज करो'', वाली नीति अपनाता है। स्वयं मेरे परिवार में इस निति का प्रयोग किया दूसरों का क्या वर्णन करूं जो प्रत्यक्ष प्रमाण है। विस्तार से इसकी एक-2 घटनाओं का निश्चित समय सहित जो मेरे साथ घटना घटी मेरे साथ जैसे इनके विचार विमर्श हुए उनका सत्य-सत्य वर्णन अपने जीवन चरित्र में कि हैं जो उचित समय में प्रकाशित किया जाऐगा जो कि कड़वी अटल सच्चाई होगी और सच्चाई कभी दबाने से दबती नहीं एक ना एक दिन ऊपर अवश्य आती है। यह तो ऐसा झुठा बुगला है जो ऊपर से साफ अन्दर कपट मेरे परम पुज्य गुरूदेव अवधूत स्वामी भक्तराम जी महाराज ने बड़ी मेहनत करके आचार्य जगतगुरू जी महाराज का जीवन चरित्र बहुत पहले प्रकाशित किया था उस जीवन चरित्र से स्वामी जी का फोटो निकालकर अपना फोटो

लगाकर चोरी छिपे छपवाकर संगत में बाटने लगा उस पर लिखवा दिया भक्त रामपाल दास इन्जिनियर ने संग्रह करके छपवाया। स्वामी जी को जब मिला तो वह इनसे मिलने जीन्द कुटिया में गऐ। मैं भी उस समय वहीं था इस घटना को मैंने अपनी आंखो से देखा स्वामी जी जब अन्दर आए तो हमने खड़े-खड़े दूर से सत साहिब किया क्योंकि हमारे अन्दर संस्कार ही ऐसे डाले थे। हमारे पूर्व गुरू जी को स्वामी जी ने जाकर कहा कि आपने कहां से संग्रह करके जीवन चरित्र छपाया तो रामपाल दास हाथ जोड़कर खड़े हो गए कि मुझसे गलती हो गई, क्षमा किजिए आप बड़े दयालु है, मुझे ज्ञान नहीं था सो हमारे स्वामी अवधूत भगत राम जी बड़े ही दयालु है, ऐसे बड़े अपराध कानूनी जुर्म को भी माफ कर दिया और शील स्वभाव से कहा कि कितने छपाए हैं उत्तर मे राम पाल ने कहा 2000 छपवाए हैं 700 बांट दिए 1300 बाकी हैं। स्वामी जी ने कहा इन सबके फोटो निकाल कर आचार्य जी का फोटो लगाकर गरीबदासी आचार्य पीठ कोई स्वामी दयाल दास छुड़ानी धाम से भिजवा देना और लेने हैं तो मुझ से लेना मुझे बताते तैं आपको देता ऐसा कार्य आपको शौभनीय नहीं है। इतना कहकर स्वामी जी आ गए उस समय हमारी बुद्धि उलट थी क्योंकि वह इतना शोसन करते हैं किसी को भी अधिकार नहीं कोई प्रश्न करने का प्रश्न किया तो नाम रहीत हो जाता है इतना डरा देते हैं। और उन 1300 जीवन चरित्र को छुड़ानी धाम भिजवाया, उन महापुरूषों को भी कहते है ये काल के दूत है। इनको नाम उपदेश देने का अधिकार नहीं उस जीवन चरित्र की भी कॉपी मेरे पास उपलब्ध है। ऐसे कपट भरा इसका चरित्र है यह अपने जीवन चरित्र में नहीं लिखवाया झुठी चापलुसी की बातें बनाकर जनता को इक्कठा कर लिया सारे संसार को इक्कठा कर ले तो क्या कल्याण हो जाऐगा महापुरुषों की निदां करके तो आखिर नर्क ही मिलेगा। जितना तत्वदर्शी हैं मैं अच्छी तरह से जानता हुँ इसलिए तो छोड़कर आया हुँ प्रिय भक्तों बहुत सारी घटनाएं मेरे जीवन में घटी हैं। उन सबको भूलकर मैने अपने जीवन की नई यात्रा शुरू

की थी। परन्तु अब इस यात्रा में एक दुष्ट ने काटें फेंक दिए इन सबको हटाना तो मज़बुरी है हटाने ही पड़ेंगें।

भक्त प्रश्न करता :- हे गुरूदेव हमारे मन में एक प्रश्न उत्पन्न हुआ यदि आज्ञा हो तो उच्चारण करूं।

उच्चारण करो बेटा निर्भय होकर यहां नाम से रहीत नहीं होते बल्कि प्रश्नों के समाधान से नाम में दृढ़ता आती है नीर पीर को अलग किया जाता है।

हे गुरूदेव जब आप संत रामपाल दास के पास रहते थे उनसे नाम उपदेश लिया उनकी संगत कि और जैसे आपने बताया भक्त महेन्द्र आप जी के आगे कहते थे कि हम दोनों भाई इक्कठे बैठकर पिते थे तो भी आपके मन में कभी उनको त्यागने की इच्छा उत्पन्न नहीं हुई।

उत्तरः- नहीं बेटा कभी नहीं क्योंकि शास्त्रों में प्रमाण मिलता है कि अज्ञानता वस जीव से पहले कितने ही बुरे कर्म हो गए हों परन्तु महापुरुषों के सत्संग से वह अपना जीवन सुधार लेता है तो वह भक्त आत्मा कहलाता है और हजारो जीवो क़ा उद्धार भी कर सकता है। जैसे अजामेल, सदना, बालमीक जी आदि-2 बहुत महापुरुषों का प्रमाण मिलता है ऐसे ही विचार अपने हृदय में रखकर हमने सेवा, भक्ति की और संत रामपाल दास को परमात्मा स्वरूप समझा परन्तु पहले कभी अपने आपको जगतगुरू तत्वदर्शी नहीं कहलाते थे ये तो अब माया का खेल है जिसमें वो अपने आपको भी भूल गए इसी पुस्तक में आगे पृष्ठ न० 32 पर कहा है कि मुझ दास (राम पाल दास) को परमेश्वर कबीर साहिब जी फागुन शुक्ल पक्ष की एक मार्च 1997 को दिन के दस बजे मिले, तथा संगत को दान करने का सही समय का सकेंत देकर अर्तध्यान हो गए तथा इसको अगले आदेश तक रहस्य युक्त रखने का आदेश दिया (2) पृष्ठ 33 पर कहा है वर्तमान से 1947 से भारत स्वतन्त्र होने का पश्चात विचली पीठी प्रारम्भ हुई है।

सन् 1951 में मुझ दास को भेजा है।

3. पृष्ठ न० 60 पर मुझे (संत रामपाल दास) को नाम देने की आज्ञा मेरे पुज्य गुरूदेव स्वामी रामदेवानन्द जी ने दी कबीर साहिब हमारे परमेश्वर हैं वे समय समय पर मुझ दास को संभालते रहते हैं।

इन सभी ढोंग बनावटी बातों का एक ही उत्तर मैं आपको समझांऊगा परमेश्वर कबीर साहिब को तो एक नौकर बना लिया जो टाईम-2 पर इसकी संभाल कर सै, दिव्य दृष्टि दे दी जो सब ब्रहाण्डो को देखकर चित्र बनाए सैं, AC गाड़ी में बैठे-बैठे दिव्य दृष्टि सारे ब्रम्हाड़ों नै देख ले सै, आसन लगाकर बैंठना थोड़ी बोहत देर मालिक का ध्यान करना यो तो ढोंगीयां का काम हो सै। सन्तों का थोड़ी होता है संत तो AC गाड़ी में बैठकर मोबाइल फोन सुनते-सुनते च्यारो तरफ तै राईफल, बदूंक, पिस्तौलों, वालो का पहरा लगाकर दिव्य दृष्टि ने खोल ले सैं जब सब देखकर चित्र बनाएं सैं, सन् 1951 में कबीर साहिब ने भेजा था और परमेश्वर कबीर साहिब मार्च 1997 से मिल गए थे उसके बाद संभाल कर सैं हे मेरे प्यारे भक्तों परमेश्वर की प्यारी जीव आत्माओं इस प्रकार की ढोंग की बातें बता कर यह भोले भाले जीवों को अपने जाल में फंसाते है। मेरे आंखों के सामने की घटना सन् 2000 में घटी जो मैं उस समय इनके (संत रामपाल दास जी) के साथ रहता था।

भक्ति का प्यासा था सतगुरू गरीब दास जी महाराज की फूल रूपी वाणी का मैं एक भंवरा था। महाराज की वाणी प्रचार में दिन रात इनके साथ रहता था, न धूप न छाया न दिन रात कुछ भी नजर नहीं आता था बस एक ही लक्ष्य होता था महाराज जी सतगुरू जी की वाणी का प्रचार अखण्ड पाठ सत्संग करते हैं कराते हें इसमें हर प्रकार से सेवा करते हुए इस शरीर को पूरा कर देना है। दूसरा कभी लक्ष्य हुआ ही नहीं, ये तो मेरे बन्दी छोड़ कबीर साहिब जानते है आप नहीं जान सकते। परन्तु मेरे जीवन में सितम्बर 2000 में एक भयंकर तुफान आया जिसने मेरे कुछ अज्ञान के पढ़दे दूर किए रात्रि 12:30 बजे जब चिड़ी गाँव से सत्संग करके (जगतगुरू

तत्वदर्शी) संत रामपाल दास जी, ड्राईवर जयबीर, कपूरा करौंधा, सोमवीर करौंधा, मैं स्वयं भूतपूर्व नाम सजंय भक्त जी, और सेवक सूनील एक टाटा सूमों गाड़ी में बैठ कर चिड़ी से लाखन माजरा रोड़ पर चले (दिव्य दृष्टी का प्रमाण), (1997 में कबीर साहिब ने दर्शन दिए प्रमाण), (समय-समय पद संभाल करते है-प्रमाण) तो चिड़ी गाँव से एक मारूती कार पिछे लगी और उसने दो किलोमिटर गाँव से दूर जाकर (संत रामपाल की) गाड़ी के आगे अड़ा दी तीन बदमाश टाईप के नौ जवान लड़के उतर कर आए और आते ही गाडी की चाबी निकाल ली हम सबको निचे उतार लिया और सन 1951 में परमेश्वर के भेजे हुए जगतगूरू को भी गले से पकड़कर निचे उतार लिया और गन्दी-2 गालीयां देकर (जो मैं यहां नहीं लिख सकता) लगभग 200 फूट दूर ले गए पांच मिन्ट तक आपस में बातचीत चलती रही क्या बाते हुए मुझे मालुम नहीं, उसके बाद गाड़ी के पास ले आए हम सबके कान पकड़वा दिऐ और कहा यदि ऊपर उठोगें तो जान से मार देगें और हमारी पिटाई करने लगे। और जगतगुरू जी के कान भी पकड़वा दिऐ और लात घूसे मार कर बोल रहे थे कि बोल मेरी मौसी के घर फिर जाएगा। जगतगुरू जी मना कर रहे थे कभी नहीं जाऊंगा आज-आज बक्स दो। फिर प्रचार करेगा, तत्वदर्शी जी बोल रहे थे कभी नहीं करूंगा और नाक से सात लकीर निकलवाई। और कहने लगे आज तो छोड़ देता हूँ अगर आगे कहीं हरियाणे में प्रचार करते मिल गया तो घसीट-2 कर मारूंगा जा भाग जा हराम जादें। और इतना कह कर पिटाई करते-करते चाबी वापिस दे दी। और हमारे को कहने लगे इस लुच्चे आदमी की गेल्यां मिल गए तो तुम्हारा भी नम्बर लगेगा। भक्तों को बताई तो सुबह महेन्द्र, विजेन्द्र, राजेन्द्र, जयबीर आदि सभी को कहने से पुलिस रिर्पोट करवाई झूठा इलजाम महन्त दयासागर के भाई पर लगावाया। महेन्द्र ने मुझे आगे करके क्योंकि किसी को पता नहीं था कि किसने पिटाई की? और क्यों कि? प्रचार के लिए तो महन्त घुड़ानी वाले ही रोक सकते है, ऐसा शक

किया और केस भी झूठा कि बदमाशों ने 2000 रू छीन लिए और हमारे को जान से मारने की धमकी दे रहे थे। परन्तु गुरू भक्ति के अन्दर आकर ये सब किया परन्तु सांप के जहर का तब पता चलता है जब वह ढंग मारता है। दूध पिलाते वक्त पता नहीं चलता? तो प्यारे भक्तों विचार करों उस समय दिव्य दृष्टि कहां थी परमेश्वर कबीर साहिब जी क्या कर रहे थे उस समय संभाल क्यों नहीं कि? तीन प्रश्न और सामने खड़े हो गए सो इनका जवाब भी मिलेगा पहले दिव्य दृष्टि पर गोचर होईए, जो सब ब्रह्मण्ड़ों के चित्र दिव्य दृष्टि से देखकर बनाता है जिसके परमेश्वर कबीर साहिब ने जीवन उद्धार के लिए भेजा है जिसकी समय समय पर संभाल करते हैं। क्या उसको ये पता नहीं था कि बदमाश तेरी ऐसी हालत करेगें दिव्य दृष्टि ब्रह्मण्डों को देख सकती है पर चिड़ी वाला काला चैरमैन दिखाई नहीं दिया? मेरे विचार से दिव्य दृष्टि और कबीर साहिब का मिलने वाला और कबीर साहिब के भेजे हुए इन सबका प्रमाण इस एक ही उद्धारण से स्पष्ट हो जाता है।

अब रही एक साधारण व्यक्ति की बात तो परमात्मा की भक्ति में कष्ट आते है। भिरड़, तंदीऐ काट ही हो जाते है उनका स्वभाव है परन्तु महापुरूषों को आना स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए, भक्ति मार्ग में जो कष्ट दुःख आते हैं वह तो भक्ति को दृढ़ करते है। महापुरूषों का तप बनता है। परन्तु बाद में पुलिस केश होने के बाद उनको पूलिस ने पकड़ लिया तभी आश्रम करौंथा में गुलाव सिंह जी का फोन आता है कि गुरू जी उनको माफ करने में ही हमारा फायदा है। यदि उनको अन्दर कर भी दिया तो वह 6 महीने में फिर बाहर आ जाऐंगे और बदमाशों से दूश्मनी बढ़ जाऐगी। यदि वह माफी मांगते है तो उन्हें माफ कर देना चाहिए मेरे विचार से यही उचित रहेगा तो अगले दिन उन्होंने माफी मांग ली माफ कर दिया गया केश खत्म हुआ, एक साधारण व्यक्ति के साथ यह घटना कोई बड़ी बात नहीं परन्तु अवतारी पुरुष परमेश्वर के भेजे हुए, और दिव्य दृष्टि का प्रमाण, समय-2 पर कबीर

साहिब जी संभाल करते हैं यह सभी बाते स्पष्ट हो गई उसी दिन, परन्तु जब 2000 में यह घटना घटी तब ना तो जगतगुरू बने थे, ना तत्वदर्शी बने थे, और नाही किसी पंथ ग्रथ महापुरुषों की निदां चुगली होती थी और नाही अपने आपको सबसे श्रेष्ठ मानते थे। अधीनता थी केवल रामपाल दास थे मेरे प्यारे प्रभू प्रेमियों मैंने उनके अन्दर जो परमात्मा के प्रति लगन और जो मेरे साथ उनका बहुत गहरा प्यार था उसको बहुत नजदीक से देखा और महसूस भी किया है। यह सब होते हुए उनके साथ यह घटना क्यों घटी, चलों मैं ये भी मानता हुँ यह ऐसी साधारण सी घटना मार पिटाई तो किसी के साथ भी घट सकती है कोई बड़ी बात नहीं मेरे साथ भी घट सकती है। जैसे अभी कुछ दिन पिछे 5 अक्तूबर 2005 महेन्द्र, विजन्द्र, ने करौंथा आश्रम से मेरे पास 4 वर्ष के बाद फोन किया जगतगुरू तत्वदर्शी रामपाल दास जी भी पास बैठे थे, मेरी आवाज को रिकोड़ करने की कोशिश थी। महेन्द्र ने चापलुसी से बात की हम यूःपी गाजियाबाद से बोल रहे हैं आपके द्वारा लिखी संत भक्ति सन्देश पुस्तक हमने पढ़ी हम छुड़ानी गए थे वहां से मिली थी बहुत अच्छी लगी हम नाम उपदेश लेना चाहते है कब ले सकते हैं। मैंने कहा पहले आश्रम में आओ सत्संग सुनो फिर देख लेगें नाम उपदेश का भी जैसी सतगुरू महाराज की आज्ञा होगी तो नाम उपदेश भी मिलेगा, परन्तु ये सुनने के बाद कहते है की हमारा एक साथी करौंथा आश्रम में जाता है। संत रामपाल दास का शिष्य है उन्होंने एक पुस्तक निकाली है भक्ति और भगवान उसमें उन्होंने लिखा है कि आप पहले उनके साथ रहते थे फिर आप वहां से क्यों आ गए। क्या कारण हुआ मैंने उन्हें कहा आपको इस बात से क्या लेना देना है उत्तर में कहता है कि हम कहीं गलत जगह नै फंस जाएं, इसलिए जानना चाहते हैं कि आप वहां से मना करते-करते उनकों छोड़ कर आ गए मैंने कहा यदि यह बात भी जाननी है तो मेरे सामने आओं बैठ कर बात करेंगें। फिर उन्होंने पुछा आपके गुरू कौन है मैंने कहा अवधूत शिरोमणी स्वामी

भक्तराम जी छुडानी धाम इतना कहकर मैने फोन रख दिया ठीक 2 मिन्ट के बाद फिर फोन आता है। पंजाबी भाषा में महेन्द्र स्वयं बोलता है असी फिरोजपुरा तों बोल रहे है हन असी तुम्हारी पुस्तक सत भक्ति सन्देश पढ़ी अै सानू बहुत चंगी लगी अैसी नाम लेवणां चांहदे हन दसौ कदों आईए और तुसी संत रामपाल दास करौंदा आश्रम वालो के साथ रहंदे सी उन्होंने एक पुस्तक निकाली है। भक्ति और भगवान उसमें लिखा है तुसी उन्हों छोड़ कर क्यों आ गए वहीं सारी बात दुबारा दुहराई मैंने कहा आप क्या चाहते है और ये बात आप बार-2 क्यों पूछ रहे है और मैं सै भी जानता हुँ कि तुम मेरी आवाज रिकोड़ कर रहे हो महेन्द्र। मैं पहली ही आवाज में आपको पहचान गया था इतना कहते ही सारे खिल पटीयाँ हंसने लगे मैंने कहा मैं जिस कारण से मैं आया हुं उस को तुम अच्छी तरह से जानते हो महाराज भी जानते है 4 साल के बाद मेरी याद कैसे आई ये चापलुसी की बाते संत कहलाने वालो के मुख से अच्छी नहीं लगती साफ-साफ कहों तो कहने लगे आपको नाम उपदेश देने का अधिकार किसने दिया मैंने कहा मेरे परमपुज्य गुरूदेव अवधूत शिरोमणी स्वामी भक्तराम छुड़ानी धाम वालों ने दिया कि उनको तो नाम उपदेश देने का अधिकार ही नहीं है वह तो काल का दूत है मैंने कहा एक सतपुरुष के दूत तुम और तुम्हारा भाई है बाकि तो काल के दूत हैं शरम आनी चाहिए ऐसे महापुरुषों के बारे में ऐसे शब्द उच्चारण करते वक्त जिन्होंने आज 91 वर्ष की आयु मे जनता का अध्यात्मिक भौतिक कल्याण कर रहे है। जो स्वयं सतगुरू भूरी वाले महाराज के परम शिष्य हैं। जिनको नाम उपदेश देना का पूर्ण अधिकार है सतनाम सार शब्द के पूर्ण भेदी संत हैं वाणी और इतिहास के मर्मक्ष पूर्ण दानी व्योवृद संत हैं। वे जनता इक्कठी नही करते वे तो इन मख्खियों से दूर रहते हैं। उनका भेद को तो कोई विरला ही पा सकता है जिस पर उनकी कृपा होती है। और मुझ दास को सारश शब्द का ज्ञान कराकर उपदेश देने का उन महापुरुषों ने अधिकार दिया है। फिर महेन्द्र कहता है नरक में जाओंगे और अनुयाईयों को भी ले जाओंगें।

मैंने कहा सतगुरू गरीबदास जी महाराज की वाणी का गुणगान गाते-गाते सुमरन भजंन करते करते यदि नरक भी मिलेगा तो बहुत अच्छा है और अकेले क्या जाऐंगे हजार 'दो हजार' को तो कम से कम साथ ले ही जाऐगे दिल लगा रहेगा। तुम्हारे जैसे कृतधनी, व्यभक्चारी, निदंक, शोषन करता जिस सतलोक में जाऐंगे हमें तो वह सतलोक नहीं चाहिए। हमें तो वह नरक ही अच्छा है जहाँ सतगुरू महाराज के दर्शन वाणी महापुरुषों की चरण सेवा सत्संग मिलता रहे बस। सतलोक में तुम जाओ। फिर विजेन्द्र पौलंगी वाला बोलता है ये नाम देना बंद कर दो नहीं तो हम वो काम भी कर दिया करां? अर्थाथ गोली से उड़ा देगें जान से मार देगें ये सार शब्द के जानकार भक्तों के बोले हैं। आप भक्त जन अनुमान लगा सकते हैं समझधार को ईशारा ही काफी होता है। तो ऐसे-2 दुष्ट हमारे जैसे साधारण संत के साथ भी यह घटना कर सकते हैं हो सकती है परन्तु यह कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि हम तो जगतगुरू नहीं, तत्वदर्शी नहीं कबीर के भेजे हुए दुत नहीं, अवतारी पुरुष नहीं, दिव्यं दृष्टि प्राप्त नहीं अगर घट भी गई तो कोई बड़ी बात नहीं परन्तु दिव्य दृष्टि जगतगुरू तत्वदर्शी के लिए बहुत बड़ी बात है तभी तो राईफल पिस्तौलों के पहरे में रहता है।

एक बार तो मुश्किल से जान बची है दूसरी बार बचने वाली नहीं है इतना डर लगता है अपने आपको ओर दूसरों को निरभै पद प्राप्त करता है। बस मुझे ही नाम उपदेश देने का अधिकार है जो मन्त्र मैं देता हुँ किसी को ज्ञान नहीं मुझे स्वयं संतपुरुष ने भेजा है। ये सब ढोंग ओर झूठी बाते हैं। हमारे गरीबदासी सम्प्रदाय में एक से एक धूरन्धर विद्वान व्योवृद त्यागी महापुरुष है। जिनको हिन्दुस्तान के दूसरे पंथों सम्प्रदाय के महापुरुष भी आदर देते है उनके चरणों की पूजा करते हैं उन महापुरूषों को सतनाम सारनाम का पूर्ण ज्ञान है। उन महापुरुषों की आयु इतनी है जब तो रामपाल पैदा भी नहीं हुआ था उससे कई वर्षो पहले वह सतनाम सार शब्द के दाता

हैं। परन्तु मक्खियों से दूर रहते हैं हंसो का इन्तजार करते है। मुझे उन महापुरुषों के दर्शन करने का शौभाग्य प्राप्त हुआ है। जिसके हृदय में महापुरुषों के प्रति निदया चुगली ईर्ष्या भरी है वह महात्माओं की महीमा को क्या जाने महापुरुष क्या होते है। भैंस को हरे चसमें चढ़ा दे तो वह सूके तूड़े ने भी हरा समझ कर खाती है सूका तूड़ा भी उसने हरा दिखै सै तो ये जगतगुरु तत्वदर्शी कहलाने वाला रामपाल और इसका गिरोह इसके भाई रिस्तेदार से सब मिलकै बहका कर हरे चसमे। भैंस आले चढ़ा दे सैं जिसतें इसके अनुयाई भी वाए भाषा बोल सैं समझान से भी ना समझते जिस तरह भैंस ने कहै, यो तूडा सै, बत खा, पर वा मानती ही नहीं क्यूं हरे चसमें चढ रहे सैं। सारा हरा-हरा दिखै सै साची बात सै पर जब चसमें उतार दे तो उसकी तरफ मूंह भी ना करे। चसमें उतरती एं उसने ज्ञान हो जा से हरा नहीं तूड़ा सै। मेरे तो बन्दी छोड़ गरीबदास महाराज की असीम कृपा से और महापुरुषों के आर्शीवाद हैं ये चसमें उतरगे तब मुशकिल से इस गिरोह मैं तै निकलकर आया सुं आण भी नहीं दे थे बहत बुरी तर डराया कुत्ता बनैगा, मार खावेगा कहीं ठिकाना नहीं सैं, मत जा कबीर साहिब की साखी कबीर सागर मैं तैं सुनाई इसी पुस्तक भक्ति के भगवान) के पृष्ठ न० 5 पर लिखी है। सतगुरू महाराज नैं बड़ी मेहरे करी की जरा सा भी डर नहीं लगने दिया क्योंकि मैंने अप्रैल 2001 में जब पूना रविन्द्र डाका के गए उसमें पहली रात का हुई घटना को अपनी आखों से देखा था बहुत गोर से और पृष्ठ न० 6 पर जिस भक्त कृष्णकांत का नाम लिखा है जो करौंथा का ही रहने वाला है जिसका गाँव का नाम बिन्टा S/o हरिराम है उसने भी थोड़ी सी झलक देखी थी तभी मैंने उसको कहा था यहां से निकल जा कुछ नहीं है उसने कहा पहले आप निकलों फिर मैं निकलता हुँ।

मुझ पर तो सतगुरू की दया हो गई परन्तु उसको डरा कर वहीं रख लिया, कि कबीर साहिब ने भी लिला की भी, यह तो स्व्यं कबीर साहिब हैं

लिला कर रहे हैं ये शब्द मुझे भी महेन्द्र ने कहे जब उनको ये पता चला की संजय जा रहा है। किसी तरह इस को रोको तो मैंने कहा महेन्द्र भक्त जी कबीर साहिब ने लिला हाथी पर बैठकर चौंडे बैजार मैं की थी।

मैंने एक चिठठी लिखकर श्री रामपाल दास जी को दी कि मेरा मन मेरे बस में नहीं है। मैं घर मे रह कर भक्ति करना चाहता हुँ तो उन्होंने मुझे एकान्त में बुलाकर कहा कि बेटा ये बात तो नहीं है। क्योंकि मैंने 5 साल हो गए आपको देखते-2 ये कारण नहीं है कोई और कारण हैं किस वजह से जा रहे हो फिर मुझे अन्दर कमरे में बुलाया जहां पर वही औरत अन्दर बैठकर संत रामपाल जी के पैर दबा रही थी। संत राम पाल के दोनों पर उसने अपनी सातलो (पट) के ऊपर रखे थे तो मैने अन्दर जाकर डडौंत प्रणाम कर बैठ गया केवल हम तीन ही कमरे में थे तो मुझे साखी सुनाई ऊंच नीच में हम रहां; हाड़ चाम की देह सरजुन अरजुन समझीयों, रखियों शब्द स्नेह।

ये साखी सुनकर मेरी आखों में पानी आ गया तो महाराज जी कहने लगे अब बता क्या बात हैं तो मैने हिम्मत सी करके कहा कि यह औरत अकेली अन्दर आती है बाहर सभी तकरार करते है और जब आप पूना गए उस दिन से पहला पूरा दिन व रात यह अन्दर आपके पास कमरे में ही रही यह सब अच्छा नहीं है हम गलत नहीं सोचते परन्तु यह सब अच्छा नहीं मैंने तो एक शिक्षा दी थी परन्तु उल्टी मेरे पर ही पड़ गई वह औरत झट से एक दम बोलती है मैं तो ऐसे ही आऊंगी ऐसे ही रहूंगी जिसकी मां ने दूध प्या रखा है मुझे रोक कर देख लेना गोली मार दूंगी तो इस बात को सुनकर हमारे पूर्व गुरूदेव संत रामपाल दास जी महाराज जिसको मैंने अपना तन मन धन सभी भी अर्पण कर दिया था मेरी भक्ति वैराग की तरफ न देखते हुए उस औरत के जाल में फंस गए मुझे कहते हैं ये तो ऐसे ही आऐगी ऐसे ही रहेगी किसी ने रहना है तो रहो जाना है तो जाओ मैं डंण्डौत प्रणाम करकें उसी वक्त किसी को कुछ भी न कहते हुए कमरे से बाहर आ गया और एक

तरफ जाकर बहुत रोया बन्दी छोड़ ये सब क्यां हो रहा है। प्रिय भक्तों अगर मेरी जगह आप होते तो क्या करते थोड़ा अपने दिल पर हाथ रखकर देखों विचार करो इसलिए मैंने वंहा से निकलना ही उचित समझा।

सारी जनता के सामने की थी, झाकी दरवाजे बंद करके सारी-सारी रात सुबह ९ बजें तक लिला नहीं हुआ करती किसी और को बहकाना, उत्तर में महेन्द्र जी कहते हैं अभी आपने देखा ही क्या है दस दस भी इनके साथ रहेंगी। मैं उसका नाम भी जानता हुँ परन्तु मैं किसी का नाम नहीं लिखुंगा क्योंकि मैं बुरा तो हुँ पर इन जितना नही? एक बार पूर्णिमा को संत्सग था विरेन्द्र सुहाग जो रविन्द्र ठाका पुना वाले का जीजा जी वह संत्सग में पूर्णिमा को करौंथा आश्रम में आया था तो अचानक फोन करने वो कमरे में चला गया तो उसने भी उसको रसोई में देखा तो बाहर आकर मुझे कहां संजय भक्त जी यह क्या हो रहा है " बंब पाटेगा कदे" आप इसे रोक नहीं सकते मैंने कहा गुरू जी की आज्ञा है ये तो इनकी लिलाएं है। शायद रविन्द्र सुहाग गुरू भक्ति के अन्दर आकर इस बात को भूल गया होगा पर मुझे अच्छी तरह याद है। इसी पुस्तक भक्ति और भगवान के पृष्ठ न० 10 पर लिखा गया है कि मेरी चाल थी की मैं संगत को अपना बनाकर करौंथा आश्रम का महन्त बंनू। तत्वदर्शी की कितनी छोटी बुद्धि है क्या इलजाम लगा रहे हैं अपने अवगुणों को छुपाने के लिए? यदि मुझे आश्रम प्राप्त करना होता तो आज चार साल के बाद यह पुस्तक निकालने की आवश्यकता नहीं थी उसी दिन भांड़ा फोड़ देता तो यह नौबत ही नहीं आती मैं गाँव के दस बीस आदमीयों को इक्कठे करके आपको रंगे हाथों पकड़वाता तो पता चलता ये मेरी सराफत थी मजबुरी थी यदि मैं ऐसा करूंगा तो जनता का भक्ति से विश्वास ही उठ जाऐगा जैसे मेरा उठ गया था इसलिए किसी का भक्ति से विश्वास जा उठे अपने आप को बुरा कहते हुए किसी को पता न चले चूप चाप निकल आया। किसी को जरा सा भी जिकर नहीं किया केवल अपने परिवार को बताया था जो मेरे चाचा के

परिवार है मेरे पिछला परिवार है उन सबको भी बताया था पर अब भी आपके पीठ बने हुए है उन सबको बताया था पर उस समय तो कह रहे थे आ जा अपने घर में ही भक्ति कर लेना और आप सब कुछ जानते हुए भी अब भी उसी के पिठू बने हुए है। मैं आश्रम का भूखा नहीं, ना ही महन्ती का भूखा था, मैं तो भक्ति का भूखा था मैने तो पहले भक्त महेन्द्र व कृष्ण सिंह लाठर जो कि रामपाल का जीजा है इनकी चाल व षड़यन्त्र से दूःखी होकर पागल पन का भी डोंग कर लिया था कि मैं पागल हो गया भक्त बिजेन्द्र पौलंगी वाला ओर अन्य भक्तों ने सारी संगत में हफवा फैला दी थी कि संजय मे काल बड़ गया वह पागल हो गया पर मैंने इनके बनाए हुए षड़यन्त्र से दूःखी होकर पागल पन का नाटक किया था कि यदि पागल बन के भी गुरू-चरण शरण मिली रहे तो भी अच्छा है इतनी ज्यादा गुरू भक्ति थी मेरे अन्दर उसका अनुमान मैं ही लगा सकता हुँ उसी समय एक सप्ताह पश्चात रविन्द्र ढाका पूना से आश्रम करौंथा में आ गया उसको आश्रम में आते ही गुप्तचरों ने बता दिया की भक्त सजंय के अन्दर काल बड़ गया वह पागल हो गया रविन्द्र ढाका जी उनकी किसी बात का उत्तर न देते हुए हसने लगे वे बहुत अच्छे दयालु भक्त है। भक्ति को समझने वाले हैं वे मेरे पास आए मैं उस समय सोया हुआ था मुझे देखकर वह एक तरफ जाकर सेवा करवाने लगे जब 1 घण्टे के बाद में निद्रा खूली तो मैं पागलपन का डोंग करते हुए बाथरूम की तरफ चला तो उसने मुझे देख लिया तो मैनें ईट उठा ली कि यह भी मूझ से डर जाएगा दूर भाग जाएगा परन्तु वह भागने वाला नहीं था, उसने हंसते हुए जल्दी सी आकर मेरी जफी भर ली अपने सीने से लगा लीया अपने बच्वे की तरह और कहा भाई यह संसार बहुत बुरा है यदि पागल बन के रहने दे तो भी अच्छा है मैं सब जानता हुँ तुम ये जान बुझ कर कर रहे हो और उस घटना को सारे आश्रम वाले देख रहे थे कि रविन्द्र को तो कुछ कहा नहीं पागल नहीं है शायद रविन्द्र ढाका जी भी इस बात को भूल गए होंगें गुरू भक्ति में। जीव

सब भूल जाता है। परन्तु मुझे अच्छी तरह एक एक बात याद है। जिन-2 भक्तों के पास मैं गया उन सभी के साथ मेरा अच्छा प्यार था वे सभी दिल से जानते है कि मैं कितना बुरा था इसी पुस्तक के (भक्ति और भगवान) के पृष्ठ न० 7 पर तत्वदर्शी जी इलजाम लगाते हैं कि सजंय (कृष्ण दास) एक बहन के घर पर गया भगवा कपड़े, पहन रखे थे गले में माला डाल रखी थी तथा रात्री में उसके घर पर रूका मन चाही सब्जी बनावाई हलवा बनवाया जी खोलकर निद्या की यह भी एक झूठा ईलजाम है माला तो आज तक हमारे गुरूओं ने कभी नहीं पहरी हम तो श्वासों की माला पहनते है और मै किसी के घर पर भी नहीं गया क्या कभी आप भक्तों से मन चाही सब्जी बनवाई आप लोग हाथ जोड़कर पूछते रहते हैं महाराज क्या खाओगें कभी कहा नहीं, क्योंकि सतों की कभी इच्छा नहीं होती जो मिलता है। उसको बड़ी श्रृदा से खाते है। और आज तक कभी किसी भक्त के घर पर जाना तो दूर फोन तक भी किसी के यहां नहीं किया। क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि सभी के हरे चश्में चढ़ें हुए हैं मेरी बात को कोई नहीं मानेगा इसीलिए किसी को बताने का कोई फायदा नहीं पृष्ठ न० 2 और 3 पर निचता की हद कर दी यह तो चुगल खोर है, तथा इसमें कपट का अन्त नहीं पूजा के रूपयों में भी हेरा फेरी करता है अपने छोटे भाई की तलवन्डी में फर्निचर की दूकान भी खुलवादी है। तत्वदर्शी जगतगुरू की नीचता संतो से हट कर साधारण परिवार को बदनाम करने पर उतर आई कम से कम इतना तो सोच लेते जब मैं आपके पास आया उस समय नौकरी करता था 3000 रू की नौकरी छोड़कर अपने छोटे-2 भाईयों को छोड़ कर जब एक 8वीं कक्षा में पढ़ता था एक 7वीं में और एक 5वीं मे पढ़ता था उस घर में कमाने वाला मैं ही एक था और उस समय उनको छोड़कर आपके पास आया था इतना जबरदस्त विवेक था मेरा, क्या मैं ऐसा नीचता का कार्य कर सकता हुँ, यह तो पूरा करौंथा गाँव जानता है उस समय उस बेचारे ने अपनी 8 वीं की पढाई छोड़कर 20 रू में मजदूरी

की अपना लकड़ी की जोड़ीयों को काम सीखा और शुरू से आखीर तक गाँव में ही रहे हैं या रोहतक में विश्वकर्मा स्कूल के सामने काम सीखा है। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि वह भूखे है या प्यासे हैं। यह इलजाम लगाने से पहले तलवन्ड़ी भाई फिरोज़पुर (पंजाब) में पता तो कर लेते ऐसा कभी हुआ भी है या नहीं? यह सब इन सब ने मिलकर एक मन धड़त कहानी तैयार की है किसी को बदनाम करने के लिए क्योंकि मेरे अचानक जाने का कारण जवाब यह संगत को सत-सत नहीं बता सकते तो कोई इलजाम लगाना जरूरी है।

पृष्ठ न० 8 वा इलजाम लगाते है झूठ भी बोलों तै संवारे कैं तो बोलों बोलना भी नहीं आता। वह संजय सापंला में एक भक्त के घर पर रूका उन्होंने बहुत सेवा की कुछ दिन के बाद भक्त की पत्नी के पेट में पानी की रसौली फूट गई मेरी सभी भक्तों से प्रार्थना है (भक्ति और भगवान) पुस्तक को दौबारा गोर से फिर पढना, कहते है फिर कुछ महिनों बाद उसके दोनों लड़कों की भंयकर दुर्घटना हो गई छोटे बच्चे के संब दांत निकल गए इलाज कराया परन्तु लड़के की पीड़ा बढ़ती ही जा रही थी लड़का उस समय 12 वर्ष की आयु का था लड़के ने कहा मुझे करौंथा आश्रम में गुरू जी के पास ले चलों, उसी दिन उस बचे का दर्द समाप्त हो गया दांत जो हिल रहे जाम हो गए।

विचार करो पहले कहते हैं सब दांत बाहर निकल गए फिर तत्वदर्शी बुद्धि कहती है जो हिल रहे थे वह जाम हो गए लगता है पी.जी.आई खोल रखी है ऐसी झुठी मन घड़त कहानीयाँ तैयार की हैं कहीं कोई मेरे पास आ जाए किसी को सच्चाई का पता न चल जाए इसलिए ऐसी डरावनी बातें लिखी है तलवन्ड़ी पजांब की संगत आज भी मेरे पास आती है मैं भी वहां समय-2 पर जाता रहता हुँ ओर रही गुरू द्रोही की बात तो एक गुरू को छोड़ कर दूसरे गुरू के पास जाने वाला गुरू द्रोही नहीं होता यदि ऐसे गुरू द्रोही होता है तो रामपाल और इसका टोल सारा गुरू द्रोहीयों का कठ्ठा हो

रहा है। कोई किसी को छोड़कर आ रहा है तो कोई किसी को। इस वाणी का विस्तार से अगले भाग में वर्णन करूंगा और वाणी के द्वारा सिद्ध करूंगा की गुरू द्रोही मैं नहीं बल्कि जगतगुरू तत्वदर्शी कहलाने वाला स्वयं रामपाल गुरू द्रोही है। प्रथम पृष्ठ पर ही लिखा है। कि तड़क-भड़कर कर बोलना, चटक-मटक कर चलना उसका स्वभाव है आंखे बंद करके अकड़ कर बैठ कर दिखावटी बुगला भजन करके डोंग करना?

हे प्रिय भक्तों जो गुण भी इसको अवगुण लगते है यह तो पका देश द्रोही है इसे तो हिन्दुस्तान में नही रहना चाहिए जो भारत माता की संस्कृति के खिलाफ बोलता है। शास्त्रों की झुठी गवाई देता है। एक लेख में मैंने पढ़ा सिकन्दर उस देश पर आक्रमण नहीं करता था जिस देश में मनुष्य सिधे अकड़कर बढ़ते थे। ये तो भक्ति के लक्षण है मेरू दण्ड को सिधा करके बढ़ना चाहिए, और चटक-मटक कर फूर्ती से चलना चाहिए आलस्य नहीं होना चाहिए, और प्रश्न का उत्तर झट से सत-सत देना चाहिए धूना नहीं बनना चाहिए, ये तो भक्तों के लक्षण होते है। आचार्य गरीबदास जी महाराज जी भी वाणी में कहते हैं।

मेरूदण्ड कुं राखे सुधा, जाका कमल न होवे मूंधा) आसन बंध अडोल मन, यंहू पावै पीव पुरुष पूराना रे।

वारे रे तेरी तत्वदर्शी बुद्धि कमल तोड़ दी साहिब गरीबदास भी फैल कर दिया। और चीड़ी वाले काड़ मैं तो मरी भी कमर कई दिन तांई दूखी थी। मैं कुंकुर मानू तू कबीर साहिब का भेजा दूत है।

हे प्रिय भक्तों इस पुस्तक (भक्ति और भगवान) को मैंने अभी अच्छी तरह नहीं पढ़ा है मोटा-2 पढ़ा था इसलिए कुछ थोड़ा उत्तर दिया है गोर से समय लगने पर पढूंगा बाकी की पुस्तक भी किसी से मगवांकर पढूंगा। क्योंकि मुझे तो देगें नहीं? और आगे जैसी प्रक्रिया होगी सतगुरू जी का आदेश होगा तो तत्वदर्शी बुद्धि की तत्वदर्शी झलकियां प्रकाशित की जाऐगी समाचार पत्रों से या टेलीविजन से या पुस्तको से, मेरे परमपूज्य गुरू देव

अवधूत शिरोमणी स्वामी भक्तराम जी महाराज का भी सिद्धान्त शुरू से रहा है एक का डबल करके देना, चाऐ वो कुछ भी है कोई उनकी सेवा करता है तो वह उनकी डबल सेवा करवाते हैं। ओर ऐसा ही आदेश हम शिष्यों को दिया है स्वामी ब्रह्मस्वरूप जी महाराज, व मुझ संत कृष्णदास को सो महाराज के आशीर्वाद से इस प्रण को हमेशा ही निभाते रहेंगें रामपाल की पुस्तक का जवाब पुस्तक से दे रहे हैं। बातों को जवाब बातों से देंगे। पत्र का जवाब पत्र से देगें और उसकी गोली का जवाब अपने सीने से देगें, हम हर वक्त हर समय हर परिस्थिती में रामपाल की तरफ से आने वाली हर प्रक्रिया के लिए तैयार हैं। परन्तु ये संतो के लक्षण नहीं अपने नाम के आगे इन्जिनियर रामपाल लिखें जगतगुरू, तत्वदर्शी, संत न लिखें क्योंकि संतों के लक्ष्ण महाराज गरीबदास जी ने वाणी में लिखें है।

सोई साध अगाध है आपा न सरा है, पर निन्दा न संचरै चुगली नहीं चाहै, जिस वाणी का सहारा लेकर चलते हो उसको अच्छी तरह पढ़ो उस वाणी से प्रेम करो और सतों की सेवा करो महाराज गरीबदास जी भी सतों की सेवा करते थे। महाराज का जीवन चरित्र पढ़ कर देखो जो हमारे गुरू जी ने प्रकाशित किया है जिसको आपने चोरी छिपे छपवाया था। पढ़ा नहीं ? और आप संतों की तलासी लेते हो संतों की निद्या करते हो अपने आपको ही जगतगुरू मानते हो दूसरों को नीच मानते हो जो स्वयं नीच, चुगलखोर है उसको सब से ही नजर आते है आप अपने प्रचवनों में कहते थे चोर को सब चोर नज़र आते है। तो आप को सभी असंत नजर आते है तो जरा अपने आप में भी थोड़ा झांक कर देख लों, दूसरे पर किचड़ डालने से पहले अपने आप पर डाल कर देख लेना चाहिए। इसलिए मैं संत होने के नाते दोबारा फिर प्रार्थना कर रहा हुँ कि इस इर्षात्मक, बुद्धि को छोड़कर मालिक से और संतो से प्रेम करना सिखो, बेड़ा पार हो जाऐगा, गरीबदासी सम्प्रदाय में बड़े अच्छे-2 त्यागी, संतोषी शील को धारण करने वाले बहुत संत हैं अपने आपको संतो का दास बना लो बड़ा आनन्द आऐगा संसारीक मान

बड़ाई से मोन धारण कर लो परमात्मा भी संतो का दास होता हूं, मैं तो उन संतों का दास हुं जिन्होंने मन मार लिया, तो आपको भी पता हैं आप क्या हैं मुझे भी पता हैं और बहुतों को पता चल चूका है इसलिए इस मन की दौड़ को छोड़ दो कि संसार सारा मेरे वस में हो जाए हो भी गया तो क्या हुआ।

मुझे इस बात का भी ज्ञान है कि आप माया के किचड़ में इतने धस चूकें है कि आप निकल तो नहीं सकते लेकिन फिर भी लिख दिया मैं ज्यादा समय इस वक्त पुस्तक लिखने में नहीं लगा सकता क्योंकि मैं समझता हुँ ये सब बेकार की बाते हैं भजन में बाध्य है क्योंकि मुझे ना तो जनता इक्ठठी करनी है, न मुझे सांसारिक बड़ाई चाहिए जो वस्तु मुझे गुरूदेव जी ने दे दी। मैं आनन्दमय हुँ परन्तु भक्ति और भगवान नामक पुस्तक निकाल कर बेजती करते हुए मुझसे पुछा गया कि आप वहां से क्यों आऐ इसका उत्तर दिया है थोड़ा सा, आगे भी शरीर रहा तो देते रहेंगे परन्तु मुझे किसी प्रकार की प्रश्न की आवश्यता नहीं मैं आनन्दमय हुँ इस समय गुरूदेव की आज्ञा से सतगुरू गरीबदास महाराज की वाणी श्री गुरू ग्रंथ साहिब के संशोधन में लीन था 3 साल से जो हस्त लिखित 21 ग्रंथ साहिबो की सहायता से कार्य सम्पूर्ण हो पाया वि० स० 1834 वाले ग्रंथ साहिब को प्रथम लक्ष्य रखा जो खसरा ग्रंथ साहिब है उसी के आधार से खसरा ग्रंथ साहिब अब जल्दी ही गरीबदासी आचार्य पीठ कोठी स्वामी दयाल दास (सतगुरू सन्त मन्दिर) की तरफ से प्रकाशित किया जाएगा जिसमें काफी फेर बदल हुआ है रात्रि का पाठ जैसे पारख का अंग अचला का अंग दिन में आऐंगे कुछ शब्द, राग, दिन में आऐंगे जो अखण्ड पाठ सुनने वालो के लिए काफी अच्छा होगा सो ऐसे कार्य में समय लगाना मैं सफल समझता हुँ प्रिय भक्तों संतो के तो दर्शन मात्र से ही कर्म कटते हैं

सेवा मिल जाए तो कहना ही क्या है अपने हृदय के अन्दर भाव रखों महाराज वाणी में कहते है।

गरीब साहिब सेती दोस्ती, संतो सेती प्यार।

तिनकु संका है नहीं धरमराय दरबार।

सतों की निदां करने वाले दुष्टों से बचो मैंने एक दृष्टांत में एक कथा पढी थी जो जो मुझे संत सेवा के लिए प्रेरित करती है।

एक निर्धन वैश्य था परन्तु उसके दिल में हर समय परोपकार करने के ख्याल बने रहते थे तथा किसी को दुखी देखकर सहन नहीं कर सकता था। अपना परिवार अधिक था परन्तु आप दो दिन भूखे रहकर भी दूसरो को भोजन करा दिया करता था एक दिन नदी किनारे संन्धा करने लगा तो वहां तीन सन्त तीन दिन से नदी किनारे भूखे खड़े थे उनको भूखें देख कर चित्त में ख्याल आया कि मैं अपने को बेचकर भी इनकों भोजन अवश्य खिलांऊगा। उंधर आप भी परिवार सहित दो दिन का भूखा था। बच्चे भूख के मारे रो रहे थे और खाने के लिए कुछ मांग कर उनको तंग करते थे परन्तु संतो को वह निमन्त्रण दे आया और घर आकर सब समाचार सुनाया। तब उसकी स्त्री ने कहा कि मेरे पिता का दिया हुआ मेरे पास हाथ का कंगन है मैंने अब तक छिपा कर रखा था लो अब इसको बेचकर भोजन सामग्री ले आओं संतों को खिलाकर शेष बच्चों को खिलाओं तब उस वैश्य ने कंगन को बेचकर भोजन सामग्री लाकर भोजन बनाकर सन्तों को खिलाया तद्पश्चात बालकों को खिलाया। परन्तु उनका बड़ा लड़का हठ कर बैठा कि भोजन न करूंगा क्योंकि हम भी दो दिन के भूखे पड़े थे। हमारे लिए तो कगंन नही बेचा अब सन्तों के लिए कंगन बेचकर सन्तों को भोजन खिलाया है अपने बच्चों से अधिक सन्तों को मान बैठे है। हमारे से प्रेम नहीं तब पिता ने कहा कि हे पुत्र हमको तो संत ही प्यारे है ''धिगंत मात-पित स्नेंह'' इत्यादि सहसक्रिति शलोको में लिखा है कि माता-पिता, स्त्री, पुत्रादिक सम्बन्धियों से प्रेम करने वालों को अंत में धिक्कार मिलती

है और संतो से प्रेम करने वालो को धन्यवाद मिलता है तथा संतो की सेवा करने का बड़ा महातम है तथा महान पुण्य की प्राप्ति होती है तब पुत्र ने नम्र होकर कहा कि संत सेवा से क्या फल प्राप्त होता है मैं यह सुनना चाहता हूं तब उन सन्तों में से एक सन्त बोलें, कि यहां से सौ कोस की दूरी पर एक जंगल में अमुक पर्वत की गुफा में नदी के किनारे एक सन्त रहते है तुम वहां जाओं वह तुम्हें संत सेवा का महातम सुनायेगे तथा हम तेरे को आशीर्वाद देते है। कि तुम्हारे को रास्ते में भूख प्यासादि, बाधाये न सतावेंगे तथा पशू, पक्षी देव किन्नरादि सब की भाषा तुम समझोगें परन्तु रास्तें में जाते हुए परोपकार करते हुए जाना होगा वह माता-पिता तथा महात्माओं को नमस्कार करके चल पड़ा। चलते-चलते रास्तें में रात्रि पड़ी वहां एक चंडाल अपनी स्त्री सहित रहता था। उस चंडाल ने इस लड़के की वन के फलो से सेवा की परन्तु चाण्डाल की स्त्री ने पति के कहने पर कुछ सेवा नहीं की, तब उस चंडाल ने वैश्य के लड़के से कहा कि मैं इस नीच योनी तथा दरिद्रता से मुक्त हो जाऊ और तुम सन्तों के पास जा रहे हो। इसलिए तुम उनसे मेरी प्रार्थना करना, उसने कहा, अच्छा कर दूंगा फिर आगे चलते-चलते रास्तें में एक राजा से मेल हुआ तो राजा ने उसकी बहुत सेवा की तथा वार्तालाप करते हुए कहा कि आप सन्तों के पास जा रहे है मेरी तरफ से भी प्रार्थना करना कि मेरे घर सन्तान होती है परन्तु मर जाती है इसलिए मेरे को एक दीर्घायु पुत्र प्रदान करें तब मैं पुत्र के दुःख से मुक्त हो जाऊंगा। और सन्तों की अधिक सेवा करूंगा फिर आगे गया तो शहर में एक बड़ा भारी सौदागर मिला वह सात मंजिल महल को बनवा रहा था परन्तु वह बीच में गिर जाता था पूरा नहीं हो पाता था इसलिए वह बहुत दुःखी होता था तो उसने कहा कि मेरी तरफ से भी सन्तों से प्रार्थना करना कि मेरा सात मंजिल महल पूरा क्यों नहीं होता? बीच में ही क्यूं गिर जाता है मैं दान पुण्य बहुत करता हूँ परन्तु मकान फिर भी पूर्ण नहीं होता इसमें क्या कारण है फिर आगे चला तो एक कुंए पर पीपल

का वृक्ष था उसके नीचे ही दोपहर को आराम किया उस वृक्ष पर एक यक्ष रहता था उससे मेल हुआ तब उसने कहा कि सन्तों से पूछना कि इस पीपल का एक टहना क्यों सूखा रहता है फिर आगे गया तो एक नदी आई उसमें से एक दरियाई घोड़ा निकला तब उस घोड़े ने कहा कि मैं बड़ा हस्ट-पुष्ट हूँ परन्तु मेरे ऊपर कोई सवारी नहीं करता इसलिए मेरा जन्म निस्फल है। मेरे पर सवारी न करने का कारण सन्तों से पूछना। फिर थोड़ा बढ़ा तो एक मगरमच्छ मिला उसने कहा कि मैं शीतल जल में रहता हूँ फिर भी जलता रहता हूँ इसका क्या कारण है तथा उपाय पूछना।

फिर नौका द्वारा नदी से पार होकर पर्वत की गुफा के सन्तों के पास पहुंचा। तथा सबका समाचार और अपना हाल भी सुनाया। तब सन्तों ने कहा कि पहले हमारी प्रेम से सेवा करों तब सब बातों का उत्तर मिलेगा तब वह वैश्य का पुत्र शिष्य रीति अनुसार प्रेम से एक वर्ष पर्यन्त सेवा करता रहा तब सन्तों ने प्रसन्न हो कर उस को सब बातों का उत्तर दिया और कहा कि तुम सब को हमारे बतलाये हुए उत्तर देते जाना और तुम्हारे प्रश्न का उत्तर उस राजा के घर जो पुत्र उत्पन्न होवेगा वही देवेगा तब वह सन्तों को नमस्कार करके आज्ञा लेकर चल पड़ा तो रास्ते में प्रथम वह मगरमच्छ मिला उस को उत्तर दिया कि तू पूर्व जन्म में ब्राहमण था जिन गुरूवों से तूने विद्या पढ़ी थी उन की तुमने सेवा नहीं की और न किसी को आपनी विद्या पढ़ाई और न किसी को सुख पहुंचाया प्रन्युत वाद-विवाद करके दूसरो को दुख ही दिया इसलिए तू अन्य किसी ब्राहमण के शाप से मछ बना और विद्या न दान करने से जलता रहा। जब तुम विद्या दान करो तो तुम्हारी जलन दूर होगी। तब उस मगरमछ ने कहा कि मेरे को सब विद्याऐ ज्ञात है और तू मुझे योग्य अधिकारी प्रतीत होता है इसलिए मैं तुझे विद्या पढ़ाता हूँ। तब उसको सब विद्याऐ व्याकरणादि तथा षट अंगो सहित वेद और शास्त्र पढ़ाए मन्त्र जन्त्र तथा तन्त्रिक विद्या भी पढ़ा दी तब उसकी जलन दूर हुई। जब थोड़ा आगे आया तब दरियाई घोड़ा मिला तब

उसके प्रश्न का उत्तर दिया कि तु पहिले एक महात्मा का सेवक था परन्तु आज्ञा का पालन न कर स्वंतन्त्र विचरता था इसलिए उस महात्मा ने शाप दिया कि जा तूं पशु बना जा। तुम्हारा शरीर किसी के काम न आवेगा न तुझ को कोई ग्रहण करेगा और तुमने शापान्त पूछा था उसका सन्तों ने उत्तर दिया है कि जब तुमको शाप का कोई ज्ञान करवा देगा तब तुम्हे कोई ग्रहण करेगा और तुम्हारा शरीर सफल हो जावेगा। तब घोड़े ने कहा कि आप मेरे मालिक ही क्योंकि आपने ही मेरा शायान्त किया है इसलिए मुझे अंगीकार करो। तब वह वैश्य घोड़े पर चढ़कर आगे चला। फिर उस पीपल वाले कुवे पर यज्ञ से कहा कि इस पीपल के नीचे धन की निधि है उसके ऊपर एक विषधर सर्प बैठा है उसके फुकारे से इस पीपल का एक टहना सुखा रहता है जब कोई सर्प को मार कर धन को निकाल लेगा तब यह वृक्ष हरा होगा तो उस यक्ष ने कहा कि आप किसी तरह सर्प को दूर कर धन निकाल लो और पीपल को हरा करो तब उसने मंत्री द्वारा सर्प को भगाया और धन को निकाल पीपल को हरा कर घौड़े पर लाद कर आगे चल पड़ा तो उस सात मंजिल महल वाले सेठ के पास पहुंचा उसको भी उसके प्रश्न का उत्तर दिया कि तेरे घर पच्चीस वर्ष की कुंवारी कन्या बैठी है तूने अभी तक उसकी शादी नहीं कराई तेरे को कोई वर पसंद नही आता जब वह कन्या काम से पीड़ित होकर ढंडा श्वास भरती है तब तेरा महल गिर जाता है तब सेठ जी ने विचार किया कि इस लड़के से बढ़कर धर्मात्मा और योग्य वर कहां मिलेगा। ऐसा विचार कर उस लड़के को कहा कि तुम ही मुझे योग्य वर मिल गये हो इसलिए आप मेरी कन्या की शादी स्वीकार करो। क्योंकि आपके पास धन विद्या सब वस्तुएं है तब सेठ ने मुहूर्त दिखा कर कन्या की शादी कर दी, तब वह वहां से चलकर राजा के पास पहुंचा तब उसने राजा को कहा कि उन सन्तों ने यह उत्तर दिया है कि तुम्हारे घर पुत्र उत्पन्न होगा परन्तु जब वह मेरे से चार बाते करेगा तब दीर्घायु होगा राजा ने कहा अच्छा आप मेरे पास ठहरो जब लड़का पैदा

हो जाये आप चार बाते करके उसकी दीर्घायु कर देना। तब मैं आपका गुरू के समान पूजन करूंगा। ऐसे कह उस वैश्य पुत्र को ठहराया, जब लड़का पैदा हुआ तब उसने एकान्त में ले जाकर लड़के से वार्तालाप किया तब उसने कहा कि मैं आपकी सेवा से राजकुमार बना हूँ मैं वहीं चंडाल हूँ जो आप को मार्ग मे मिला था और आप मेरे पास रात्रि भर रहे थे अब आपका आर्शीवाद चाहता हूँ। तब उसने आशीर्वाद दिया और कहा कि तू दीर्घ जीवी हो फिर बालक ने कहा कि जो मेरी स्त्री थी उसने आपकी सेवा नहीं की थी इसी से वे मरकर शूकरी बन गई है आप सन्मुख देखले और बहुत बच्चे जन कर दुःख पाती है ''अतिथि सत्कार न करने का उसको यह फल मिला'' फिर उस वैश्य के लड़के ने कहा कि मैंने सन्तों से पूछा था कि सन्तो की सेवा का क्या फल है तब उन्होंने कहा था कि राजा का लड़का इसका उत्तर देवेगा। अब आप बतलाओं मैंने जो एक वर्ष सन्तों की सेवा की उसका क्या फल है इस बात का उत्तर दो तब बालक ने कहा कि सन्तों ने तुम्हें प्रत्यक्ष दिखला दिया है मैं इसमें क्या कहूं। मगरमच्छ द्वारा तुमकों विद्या मिली घोड़ा तथा निधि मिली सेठ की कन्या से शादी हुई तथा मेरे पिता ने आप में गुरू भावना की और चित शांत हुआ यह सब सन्त सेवा का प्रत्यक्ष फल है और अदृश्य फल तो कहा ही नहीं जाता कि कितना होगा अब विद्या को मनन करो उस द्वारा आत्मज्ञान पाकर जन्म-मरण से मुक्त हो जाओगे। यह बात सुनकर वह बड़ा प्रसन्न हुआ और वहां से चलकर राजा से पूजा कराकर अपने घर आया और मार्ग से आने जाने का तथा सन्तों का सब हाल सुनाया तब सब सम्बन्धी बड़े प्रसन्न हुए और पहले से भी अधिक महात्माओं की सेवा करने लगे और वह विद्या का मनन कर आत्म ज्ञान पाकर जीवन मुक्ति का आनन्द लेता गया, जब उन तीनों महात्माओं ने कहा जिन्हों को कंगन बेचकर भोजन खिलाया था वह कहने लगे कि देखा सन्त सेवा का महातम्य, सन्तों की सेवा का महातम्य का कहना ही क्या है।

एक कुत्ते की सेवा की हुई भी निष्फल नहीं जाती। जैसे बसरा शहर के रहने वाली रायबां (राबीया) लड़की ने मक्के जाते समय एक प्रसूता कुत्ती की रास्ते में सेवा की तब साठ कोस इधर ही मक्का आकर मिला।

प्रमाण -6 दोहा 1. गरीब सुनही कु पानी पिया, उतरी अरस आवाज।
तीन भजल मका गया, बीबी तुम्हरे काज।
2. सिर की शोभा दूर कर चीनी आतम राम।
साठ कोस मक्का मिला देख दया के काम।।

अर्थ :- कुत्ते की सेवा की हुई भी परेमश्वर गुम नहीं करता फिर महात्मा जनों को सेवा की हुई कैसे गुम कर सकता है।

और (भक्ति और भगवान) पुस्तक का लेखक लिखता है मुझे छोड़कर दूसरे की सेवा की उसमे श्रद्धा आस्था रखी तो नाम से रहित हो जाओगे अपने घर के संविधान बनवा कर जनता को नास्तिक्ता की तरफ ले जा रहे हैं। चाडांल की पत्नी की तरह आए अतिथि की सेवा से नकारा करवाते हैं। इसलिए जो हाल चांडाल की पत्नी का हुआ वोही इसके सारे सेवको का होगा सबको कुते सुवर बना कर छोड़ेगा। इसलिए किसी से बचा जाए तो बच लो, मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता, संतो से प्रेम करलो सेवा कर लो, संतो की सेवा का बहुत बड़ा फल है और दुष्टों की सेवा बहुत बड़ा पाप है। जगतगुरू तत्वदर्शी जी इस पुस्तक को ऐकान्त में बैठकर एक बार जरूर पढ़ना विचार करना कि सजंय (उर्फ संत कृष्णदास जी गलत है या आप स्वयं गलत हैं। विचार करके कोई भी कदम उठाना जल्द बाजी मत करना, जल्द बाजी सैतानगी का काम होता है।

जिस प्रकार आप सभी की धज्जीया उड़ा रहें हैं शायद आगे आने वाले समय में भी आप के द्वारा लिखे लेखों में से ही आपकी धज्जीयां उड़ाई जाऐं इसलिए जो आपके नाम से लेख लिखते है पुस्तके लिखते है उनको कहो ध्यान से लिखे।

जैसा दर्द आपणै होवै, ऐसा जाण बराणै।

समझदारों को ईशारा ही काफी होता है। जिन कबीर सागर की वाणियों का प्रमाण गुरू महीमा के द्वारा देते हो यो एक बन्धन है ये वाणी मिलवाटी वाणी है। जनता के शोषण के लिए बाद में आने वालो ने रचना की है साहिब की ऐसी रचना नहीं हो सकती। सत साहिब की रचना आचार्य गरीबदास जी की वाणी है।

गुरू तो सबके सतगुरू कबीर साहिब है और उन्होंने ना तो कभी किसी का शोषण किया ना ही किसी को शोषण का आर्दश दिया मेहनत की और 64 लाख शिष्य हो गए तो भी मेहनत की ओर जनता को सत ज्ञान दिया। जो ज्ञान है यह कबीर साहिब बन्दी छोड़ गरीबदास जी का दिया हुआ है आप का अपना नहीं इसलिए अपने आपको एक अध्यापक ही समझों, एक प्रचारक ही समझों मालिक मत बनो, बनने वाला एक दिन डहता है, सबके मालिक सबके गुरू बन्दी छोड़ कबीर साहिब हैं मैं एक साधारण मनुष्य शरीरधारी प्राणी हुँ जो उस बन्दी छोड़ का दिया हुआ नाम ज्ञान जनता को देता हुँ मेरा अपना कुछ नहीं अभी मेरे पास समय नहीं इसलिए इसको यही विराम देते है ये दो दिन बेकार में पुस्तक लिखने में गंवा दिऐ सतगुरू बन्दी छोड़ से प्रार्थना है कि इस प्रकार फजूल की बातों में कृपा मेरा समय न जाए कृपा करें। जो जैसा करेगा आप ही पाऐगा।

आगे की प्रक्रिया का इतंजार करते है यदि हमें ऐसे दुष्टों से निपटने के लिए गरीबदासी अखिल भारतीय महा परिषद की मदद लेनी पड़ी तो वह भी लें लेगें क्योंकि मैं भी उस परिषद का एक छोटा सा सदस्य हुँ। महापुरूषों का चरण सेवक हुँ यदि जरूरत पड़ी तो परिषद में जरूर इस प्रश्न को रखेगें और हर परिस्थिति से निपटेगें।

आप सभी पाठको को दासन के दास की कोटी-2 सत साहिब। जय बन्दी छोड़ गरीबदास महाराज की।